

मूल्य शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में श्रीमद्भगवद्गीता में निहित कर्मयोग के अन्तर्गत शैक्षिक मूल्यों का विश्लेषणात्मक अध्ययन।

डॉ आरती आर्य

प्रोफेसर, शोध निर्देशक

बीसीजी शिक्षा महाविद्यालय देवास

सुश्री मेघा पंवार

शोधकर्ता

बीसीजी शिक्षा महाविद्यालय देवास

1.0.0 प्रस्तावना

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।

मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि ॥

(गीता 2/47)

कर्म करने में ही तेरा अधिकार है, उसके फलों में कभी नहीं। इसलिए तू कर्मों के फल का हेतु मत हो तथा तेरी कम न करने में भी आसक्ति न हो।

अर्जुन की तरह ही हम सब कभी न कभी अनिश्चय की स्थिति में या तो हताश हो जाते हैं या फिर अपनी समस्याओं से उद्विग्न होकर कर्तव्य विमुख हो जाते हैं। उसी अर्जुन के माध्यम से श्री कृष्ण ने सारे संसार को कर्म का ज्ञान दिया था जिसे आत्मसात् करके अर्जुन अपने कर्तव्य पथ पर अपने धर्म का पालन करने के लिए उद्यत हुआ था। भगवान श्री कृष्ण के उपदेश केवल अर्जुन को शिक्षित करने के लिए ही नहीं थे अपितु समस्त मानव जाति को ज्ञान एवं शिक्षा प्रदान करने के लिए कह गए थे।)